



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 8]

नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 10, 2005/पौष 20, 1926

No. 8]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 10, 2005/PAUSA 20, 1926

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 जनवरी, 2005

प्रारम्भिक जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य एवं चीनी ताईपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नैरो बोवेन फ्रैबिक्स के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच

सं. 14/24/2003-डीजीएडी.—1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

1. जांच के सम्बंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:-

(i) उपर्युक्त नियमों के अन्तर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) ने 9 जून, 2004 को चीन जनवादी गणराज्य और चीनी ताईपेई (जिन्हें एतदपश्चात सम्बद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नैरो बोवेन फ्रैबिक्स के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए एक सार्वजनिक सूचना घोषित की जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया। पाटनरोधी कार्रवाई उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करने वाली मै0 स्काई इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुम्बई (आवेदक) से घरेलू उद्योग की ओर से प्राप्त शिकायत के बाद शुरू की गयी थी। शिकायत में उक्त उत्पाद के पाटन और उससे हुई वास्तविक क्षति के साक्ष्य निहित थे जिन्हें कार्रवाई शुरू करने के औचित्य के लिए पर्याप्त माना गया था।

(ii) जाँच की शुरुआत से पूर्व प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जाँच शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता की पूर्णतः प्रलेखित याचिका प्राप्त होने के बारे में भारत स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को सूचित किया ।

(iii) उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (2) के अनुसार प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातक उत्पादकों, आयातकों, उद्योग एशोसिएशनों, संबंधित देशों के दूतावासों को उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और अपने विचारों से लिखित में अवगत कराने के लिए उन्हें अवसर प्रदान किया ।

(iv) उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन की प्रति उपलब्ध कराई । उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (4) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को संगत प्रश्नावली की एक प्रति उपलब्ध कराई । जाँच की शुरुआत के बारे में नई दिल्ली स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भी सूचित किया गया और उनसे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने हेतु अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों से कहने का अनुरोध किया गया ।

(v) प्राधिकारी ने संगत सूचना माँगने के लिए सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी:-

1. मै0 त्रि हुक, चीनी ताइपेई
2. ताइवान स्पेशल टेप कम्पनी, चीनी ताइपेई
3. झेझियांग हॉगविंग कं0 लि0, चीन जन. गण.
4. चिको टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज लि0, चीनी ताइपेई
5. ताइवान जोका कार्पोरेशन, चीनी ताइपेई

(vi) किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली और जाँच शुरुआत संबंधी सूचना का उत्तर नहीं दिया है । किसी आयातक ने भी आयातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है ।

(vii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उसके द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।

(viii) **** से इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है ।

(ix) पाटन और क्षति की जाँच में 1 जनवरी, 2003 से 31 दिसम्बर, 2003 तक की अवधि (जिसे जाँच अवधि ही कहा गया है) शामिल थी । क्षति विश्लेषण के सम्बंध में रूझानों की जाँच में 1 अप्रैल, 2000 से जाँच अवधि की समाप्ति तक की अवधि शामिल थी ।

(x) प्राधिकारी ने पाटन और परिणामी क्षति के प्रारम्भिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गयी समस्त सूचना माँगी और उसका सत्यापन किया। प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जाँच की। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर उत्पादन की उचित लागत तथा भारत में सम्बद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का भी विश्लेषण किया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति की समाप्ति के लिए पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।

ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद, 'फास्निंग टेप के रूप में प्रयुक्त मानव निर्मित फाइबरों से बनाया हुआ पाइल बीव वाला नैरा बोवेन फैब्रिक' है (जिसे आगे सम्बद्ध वस्तु भी कहा गया है)। बाजारी भाषा में सम्बद्ध वस्तु को 'हुक एंड लूप टेप फास्नर्स', 'बेलक्रो टेप्स', 'फास्निंग टेप्स', 'फास्नर्स' आदि जैसे विभिन्न समानार्थी उत्पादों के रूप में जाना जाता है। उत्पाद की एकमात्र विशेषता 'पाइल बीव' है। सम्बद्ध वस्तु का वर्णन पील स्ट्रेन्थ, शीयर स्ट्रेन्थ और लाइट फास्नेस के संबंध में किया जाता है। हुक एंड लूप फास्नर्स सामान्यतः मानव निर्मित फाइबर (यार्न) नाइलोन (नाइलोन 6 और नाइलोन 6,6), पालिस्टर आदि से तैयार किये जाते हैं। विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन 12 मिमी. से 125 मिमी. तक की चौड़ाई के बीच विशिष्ट आकारों में किया जाता है। उत्पाद के लिए निर्धारित माप की इकाई भार (किग्रा. अथवा मी. टन) है। इसके अलावा जब बाजार में उत्पाद की बिक्री उत्पाद की लम्बाई (मीटरों में) के अनुसार की जाती है तथा उत्पाद के विभिन्न प्रकारों की सम्बद्ध लागत और कीमत चौड़ाई के अनुसार अलग-अलग होती है तो भार में परिवर्तित होने पर यह लगभग एकसमान हो जाती है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि किग्रा० अथवा मी० टन के रूप में व्यक्त उत्पाद की चौड़ाई पर विचार करना वर्तमान प्रयोजन के लिए उपयुक्त होगा। सम्बद्ध वस्तु का उपयोग मुख्यतः गार्मेंट उद्योग जैसे उद्योगों, शल्य चिकित्सा एवं विकलांग हेतु उपकरणों के विनिर्माण, जूता एवं फुटवियर विनिर्माण, असबाब/बैग विनिर्माण, खिलौने, ऑटो मोबाइल, जीन्स आदि एवं विभिन्न अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में किया जाता है। नैरा बोवेन फैब्रिक सीमाशुल्क अधिनियम 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्ष 580610 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। तथापि, जैसा कि जाँच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में उल्लेख किया गया है, उक्त सीमाशुल्क वर्गीकरण साँकेतिक स्वरूप का है और जाँच के दायरे पर किसी भी रूप से बाध्यकारी नहीं है।

ग. समान वस्तु

3. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित वस्तुएं सम्बद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के समान वस्तुएं हैं। याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित और सम्बद्ध देशों से निर्यातित सम्बद्ध वस्तुओं में विशेष अन्तर नहीं है। याचिकाकर्ता का दावा है कि दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। समान वस्तुओं की परिभाषा से संबंधित नियम 2 (घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो जाँचाधीन वस्तुओं से हर प्रकार से 'समनुरूप' अथवा 'समान' है अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है जिसकी विशेषताएं जाँचाधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मिलती जुलती हैं। इस बात को सिद्ध करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु सम्बद्ध देशों से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है, प्राधिकारी ने तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं उपयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया है। किसी भी हितबद्ध पार्टी ने समान वस्तु के मुद्दे के बारे में कोई तर्क नहीं दिया है। जाँच के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध

वस्तु की विशेषताएं सम्बद्ध देशों से आयातित वस्तु की विशेषताओं और निर्यातक देशों के बाजार में बेची गयी वस्तु की विशेषताओं से मिलती-जुलती हैं। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा सम्बद्ध देशों से आयातित तथा वहां पर बेची गयी नैरा वोवेन फेब्रिक्स के नियमों के भीतर समान वस्तुएं हैं।

घ. घरेलू उद्योग

4. भारत में सम्बद्ध वस्तु के चार उत्पादक हैं। मै0 स्काई इंडस्ट्रीज लि0, मुम्बई ने आवेदन प्रस्तुत किया है। मै0 मैजिक फ्लेक्स प्रा0 लि0, दिल्ली तथा सिद्धार्थ फिलोमेंट प्रा0 लि0 ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन का समर्थन किया है। इन दोनों कम्पनियों ने जाँच की शुरुआत के बाद क्षति से संबंधित कुछ सूचना भी प्रस्तुत की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 स्काई इंडस्ट्रीज लि0 का उत्पादन भारत में समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन के 50% से भी अधिक बनता है। उपर्युक्त की जाँच करने के बाद प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि आवेदक भारत में सम्बद्ध वस्तु का एक प्रमुख उत्पादक है जिसका भारत में सम्बद्ध वस्तु के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है और इसलिए आवेदक नियम 2 (घ) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है और वह नियमावली के नियम 5(3) (क) के अनुसार याचिका दायर करने के आधार सम्बंधी मानदण्ड की पूर्ति करता है।

(ड.) न्यूनतम निर्धारित सीमा

5. जहां तक यह निर्धारित करने का संबंध है कि जाँच अवधि के दौरान सम्बद्ध देशों से हुए आयात न्यूनतम निर्धारित सीमा से अधिक है प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस द्वारा उपलब्ध कराये गये सम्बद्ध देशों से सौदेवार आँकड़ों का उल्लेख किया है। आँकड़ों की जाँच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि आयातों की मात्रा के सम्बंध में सभी सम्बद्ध देशों से हुए आयात न्यूनतम निर्धारित सीमा से अधिक है।

(च) पाटन

6. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9क (i)। के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

'सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या

जहाँ निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य, या

उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत।

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।

7. प्राधिकारी ने धारा 9क (i) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी। किसी भी निर्यातक ने जाँच शुरूआत संबंधी सूचना पर प्रश्नावली का किसी भी रूप में उत्तर नहीं दिया है और परिणामतः उन्हें इस जाँच में असहयोगी माना गया है।

च (1) चीन जन.गण.

(क) सहयोग

8. ज्ञात निर्यातक अथवा जांच प्रारम्भ के पश्चात अपनी जानकारी देने वाले किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों के बारे में सूचना देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।

(ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

9. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के अंतर्गत यथापेक्षित कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। यह भी नोट किया गया है कि उन्होंने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था से संबंधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के 8(3) में यथाउल्लिखित अवधारणाओं का खण्डन करते हुए कोई सूचना नहीं भेजी है। चूँकि विभिन्न परिशिष्टों के अंतर्गत कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि क्या घरेलू बिक्रियाँ व्यापार की सामान्य प्रक्रियाओं में की गई है। निर्यातक से संबंधित सूचना प्राप्त न होने के कारण प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन चीन जनवादी गणराज्य के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार की है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण चीन जनवादी गणराज्य से आयातों की कुल मात्रा और समायोजनों के पश्चात भारत में भारित औसत निर्यात कीमत को लेकर किया गया है।

(ग) पाटन मार्जिन

11. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के नियम 6(iv) के अनुसार पाटन मार्जिन भारित औसत निर्यात कीमत के साथ भारित औसत सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा सम्बद्ध वस्तुओं के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई थी। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो 355 प्रतिशत है।

च (2) चीनी ताईपेई

(क) सहयोग

12. ज्ञात निर्यातक अथवा जांच आरम्भ के पश्चात अपनी जानकारी देनेवाले किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों के बारे में सूचना देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। जांच प्रारंभ करने के पश्चात ताइवान की आर्थिक और सांस्कृतिक केन्द्र ने अपनी सरकार

की ओर से भारत का चीनी टाईपेई निर्यातों को पुनः मालूम करने के लिए प्राधिकारी को कहा था क्योंकि उनके व्यापार आंकड़ों से जांच अवधि के दौरान भारत को कोई निर्यात मालूम नहीं हुआ था। उन्होंने प्राधिकारी से चीनी टाईपेई के विरुद्ध जांच को समाप्त करने का भी अनुरोध किया था क्योंकि उस दश से भारत में कोई आयात नहीं किए गए हैं। प्राधिकारी ने यह नोट किया कि उन्होंने डीजीसीआईएण्डएस से सौदेवार आयात सूचना मालूम करने के पश्चात सम्बद्ध जांच शुरू की थी। तथापि चीनी टाईपेई से पत्र प्राप्त होने के पश्चात प्राधिकारी ने चीनी टाईपेई से उद्गम वाली संबद्ध वस्तुओं के दिल्ली (आईसीडी, तुगलकाबाद) पत्तन से सौदेवार आयातों का अनुरोध करते हुए उस अंतर्देशीय पत्तन के जरिए हुए आयात मालूम किए थे। आयात सौदों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी को यह सूचना दी गई थी कि अनेक सौदे किए गए थे जिनसे उस देश से सम्बद्ध वस्तु के आयात का साक्ष्य प्राप्त होता है। तदनुसार निर्यातकों के नामों और तारीखों सहित बी/ई संख्याओं के साथ-साथ चीनी टाईपेई से किए गए आयात वितरण की एक प्रति चीनी टाईपेई प्राधिकारियों को भेजी गई थी। चीनी टाईपेई प्राधिकारियों से आज तक कोई और पत्र प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए यह मान लिया गया है कि प्राधिकारी द्वारा भेजे गए सम्बद्ध वस्तुओं के आयात आंकड़ों से संबंधित सूचना उन्होंने स्वीकार कर ली है।

(ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

13. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के अंतर्गत यथापेक्षित कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। चूँकि विभिन्न परिशिष्टों के अंतर्गत कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि क्या घरेलू बिक्रियाँ व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई हैं। इन परिस्थितियों में नियमों के अंतर्गत सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया जाता है।

14. इसलिए उद्गम के देश में उत्पादन की अनुमानित लागतों से संबंधित उपलब्ध सूचना और बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य खर्च तथा उचित समायोजन करने के पश्चात लाभ की उचित राशि को सम्बद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में लिया गया है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण लागू समायोजनों के साथ भारत को भारित औसत निर्यात कीमत लेकर किया गया है।

(ग) पाटन मार्जिन

15. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(iv) के अनुसार पाटन मार्जिन का निर्धारण भारित औसत निर्यात कीमत के साथ भारित औसत सामान्य मूल्य के आधार पर किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा सम्बद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई थी। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए गए भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो 298 प्रतिशत है।

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन %
चीन जनवादी गणराज्य	सभी उत्पादक/निर्यातक	****	****	355
चीनी टाईपेई	सभी उत्पादक/निर्यातक	****	****	298

छ. क्षति

संचयी मूल्यांकन

16. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह व्यवस्था है कि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के आयातों के मामले में जब पाटनरोधी जांच साथ ही साथ की जा रही हो तो प्राधिकारी इस प्रकार के आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से आंकलन करेगा, यदि वह यह निर्धारित करता है कि :-

(क) यदि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा भारत में समान वस्तु के आयात का 3 प्रतिशत है अथवा जहाँ प्रत्येक देश का निर्यात 3 प्रतिशत से कम है वहाँ संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7 प्रतिशत से अधिक बनता है, और

(ख) आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों की दृष्टि से आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन उचित है।

प्राधिकारी यह पाते हैं कि

- (i) प्रत्येक सम्बद्ध देश से पाटन मार्जिन 2 प्रतिशत (न्यूनतम से कम) से अधिक हैं जिन्हें पूर्ववर्ती पैराग्राफों से देखा जा सकता है;
- (ii) प्रत्येक सम्बद्ध देश से आयातों की मात्रा 3 प्रतिशत से अधिक है;
- (iii) घरेलू उत्पाद और भारत में सम्बद्ध देशों से निर्यातित उत्पाद समान वस्तुएँ हैं;
- (iv) यह नोट किया गया है कि आयातित उत्पादों और घरेलू समान उत्पादों का एक दूसरे स्थान पर प्रयोग किया जा रहा है। विभिन्न पक्षकारों द्वारा आयातों के साक्ष्य और घरेलू उद्योग को ग्राहकवार उसके सहसम्बन्ध से यह साक्ष्य प्राप्त होता है कि ऐसे अनेक पक्षकारों, जिन्होंने घरेलू उद्योग और सम्बद्ध देशों के आयातों से खरीदारी की है। यह भी नोट किया गया है कि विभिन्न देशों द्वारा निर्यातित सम्बद्ध वस्तु की एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा हुई है ;
- (v) विभिन्न सम्बद्ध देशों से विभिन्न उत्पादकों द्वारा आपूर्ति की गई सम्बद्ध वस्तु का तुलनीय बिक्री माध्यमों के जरिए उन्हीं अवधियों के दौरान भारत में विपणन किया जा रहा है;
- (vi) कीमत में कटौती सकारात्मक है और चीन और ताईवान दोनों के सम्बन्ध में पर्याप्त है;
- (vii) सम्बद्ध देशों में घरेलू उत्पादक और निर्यातक ग्राहकों की उसी श्रेणी को उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं।

17. उपर्युक्त के मद्देनजर यह माना जाता है कि वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव का संचयी आंकलन उचित होगा।

घरेलू खपत/माँग

18. घरेलू खपत/विचाराधीन उत्पाद की माँग की गणना के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा को भारत में हुए कुल आयातों से जोड़ा है। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएण्डएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर सौदेवार आधार पर विचार किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के

दौरान याचिकाकर्ता ने संबद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तु के भारत में आयातों के संबंध में प्रविष्टियों के कुछ बिल उपलब्ध कराए हैं। यह पाया गया है कि इन आयातों में से कुछ को डीजीसीआईएण्डएस द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदेवार आयात आंकड़ों में प्रदर्शित नहीं किया गया है। अतः यह स्पष्ट है कि सौदेवार आयात आंकड़ों में आयातों की पूर्ण मात्रा को प्रदर्शित नहीं किया गया है। प्राधिकारी ने इन आयातों को डीजीसीआईएण्डएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात आंकड़ों में जोड़ा है, क्योंकि इन आयात सौदों के साथ प्रविष्टि बिल, वाणिज्यिक बीजक, पैकिंग सूची, मूलता प्रमाण पत्र इत्यादि प्रस्तुत किए गए हैं। प्राधिकारी सम्बद्ध वस्तु के 4 अंकीय स्तर से संबंधित सौदेवार सूचना भी तैयार कर रहे हैं ताकि यह जांच की जा सके कि क्या सम्बद्ध वस्तु से संबंधित सूचना भी विभिन्न शीर्षों से आयात की जा रही है। चूँकि यह कार्य प्रगति पर है इसलिए प्राधिकारी ने 6 अंकीय स्तर से संबंधित डीजीसीआईएण्डएस की सौदेवार सूचना और विभिन्न पत्तनों से प्राधिकारी को उपलब्ध कराई गई सम्बद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित प्रविष्टियों के सौदेवार बिलों की सूचना, जो डीजीसीआईएस के आंकड़ों में सूचित नहीं की गई थी, से संबंधित वस्तु की आयात मात्राओं का अनंतिम रूप से निर्धारण किया है। उपर्युक्त कार्य के आधार पर (परम्परागत रूप से आयात आंकड़े सबसे उचित हैं और इसलिए अनन्तिम हैं) यह देखा गया है कि घरेलू मांग अथवा संबद्ध वस्तु की खपत में पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई है जैसा कि नीचे सारणी से देखा जा सकता है :-

माँग	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी- दिसम्बर, 03 जांच अवधि
आयात- चीन मी. टन	0	42	112	293
सूचीबद्ध		100	269	700
आयात-ताइवान मी. टन	1	4	9	40
सूचीबद्ध	100	289	625	2818
घरेलू उद्योग बिक्रियाँ मी. टन	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	127	129	125
आबद्ध खपत	0	0	0	16
अन्य उत्पादकों की बिक्री	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	87	91	88
अन्य आयात मी. टन	8	33	14	8
सूचीबद्ध	100	401	168	100
मांग (आबद्ध सहित)	645	787	864	1061
सूचीबद्ध	100	122	134	165

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद की मांग पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ी है। तथापि घरेलू उद्योग की बिक्रियों में धीमी वृद्धि हुई है और इसमें क्षति अवधि के दौरान केवल 25% वृद्धि हुई है। वास्तव में, घरेलू उद्योग की बिक्री में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधियों में गिरावट आई है। उसी समय में उत्पाद की मांग में बहुत कम आबद्ध खपत को ध्यान में रखते हुए 65% की वृद्धि दिखाई दी है और आबद्ध खपत को छोड़कर बाजार मांग में 62% की वृद्धि हुई है। अतः इस प्रकार अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाटित आयातों ने मांग में वृद्धि होने के बावजूद इसकी बिक्री बढ़ाने से घरेलू उद्योग को वंचित किया होता।

सम्बद्ध देश और अन्य देशों के मूल के आयात

आयातों की मात्रा

19. प्राधिकारी ने पिछले वर्षों में डीजीसीआईएण्डएस से पण्यवार आयात आंकड़े एकत्र किए हैं और इन्हें डीजीसीआईएण्डएस के वास्तविक प्रविष्टि बिलों के साथ सूचित नहीं किया गया है। देश में सम्बद्ध आयातों की वास्तविक मात्रा का निर्णय करने के लिए सौदेवार आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। चीन जन.गण., ताइवान और अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा नीचे सारणी में दिए अनुसार है :-

	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जांच अवधि)
आयात- चीन जन.गण.- मी. टन	0	42	112	293
सूचीबद्ध		100	269	700
आयात-ताइवाई मी. टन	1	4	9	40
सूचीबद्ध	100	289	625	2818
कुल सम्बद्ध देश आयात- मी. टन	1	46	121	333
सूचीबद्ध	100	3196	8434	23177
कुल आयात मी. टन	10	79	135	341
सूचीबद्ध	100	817	1398	3533

प्राधिकारी पाते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों की मात्राओं में भारी वृद्धि हुई है। अतः अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विचाराधीन अवधि के दौरान पाटित आयातों की मात्रा में निरंतर एवं भारी वृद्धि हुई है। आयातों में यह वृद्धि माँग में हुई वृद्धि से अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी आई है।

कुल आयातों में संबद्ध देश का हिस्सा

20. वर्ष 2000-01 और जांच अवधि के बीच यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई और ये भारी मात्रा में थे, जैसा कि निम्नांकित तालिका से देखा जा सकता है :-

	2000-01	2001-02	2002-2003	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जांच अवधि)
आयातों में बाजार हिस्सा				
चीन जन. गण.	0.00	52.93	83.09	85.72
सूची		100.00	156.98	161.94
ताइवान	14.87	5.25	6.65	11.86
सूची	100	35.32	44.71	79.76
संबद्ध देश	14.87	58.18	89.74	97.58
अन्य देश	85.13	41.81	10.26	2.42
सूची	100	49.12	12.05	2.84
कुल	100	100	100	100

घरेलू उत्पादन के अनुपात में चीन जन. गण. का हिस्सा	0.00	6.96	19.55	48.36
घरेलू उत्पादन के अनुपात में ताइवान का हिस्सा	0.27	0.69	1.57	6.69
ज्ञात खपत के अनुपात रूप में चीन जन. गण. का हिस्सा	0.00	5.31	12.99	27.58
खपत के अनुपात में ताइवान का हिस्सा	0.22	0.53	1.04	3.82

21. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों में कुछ वर्षों में भारी वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप भारत में संबद्ध वस्तु के कुल आयातों के संबंध में संबद्ध आयातों के हिस्से में भारी वृद्धि हुई है। इसी के साथ, आयातों में अन्य देशों के हिस्से में भारी गिरावट आई है।

	2000-01	2001-02	2002-2003	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जांच अवधि)
आयातों का हिस्सा				
चीन	0	52.93	83.09	85.72
ताइवान	14.87	5.25	6.65	11.86
अन्य देश	85	41.815	10.26	13

कुल माँग में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

22. प्राधिकारी ने भारत में खपत में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से की जाँच की है। प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देशों का हिस्सा जो वर्ष 2000-2001 में माँग का 0.22% था, जांच अवधि के दौरान बढ़कर 31.39% हो गया। संबद्ध देशों से आयातों, घरेलू उद्योग एवं अन्य के बाजार हिस्से पिछले वर्षों में निम्नानुसार थे :-

व्यापारिक माँग में बाजार हिस्सा %	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग	60.69	60.84	58.62	47.65
अन्य उत्पादक	37.81	27.02	25.74	20.18
आयात- चीन जन. गण.	0.00	5.31	12.99	27.58
आयात- ताइवान	0.22	0.53	1.04	3.82
संबद्ध देश कुल	0.22	5.84	14.03	31.39
आयात- अन्य देश	1.28	4.196	1.604	0.78
बाजार हिस्से में परिवर्तन- विचाराधीन अवधि में				
पाटित आयात		2519	140	124
अन्य आयात		229	-62	-52
घरेलू उद्योग		4	-7	-21.34

23. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि संबद्ध आयातों के हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है। यह भी देखा जाता है कि इन वर्षों में और जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने काफी बाजार हिस्सा गंवाया है। इसके अलावा यह नोट किया गया है कि अन्य देशों के आयात निर्धारित न्यूनतम सीमा से कम हैं।

24. प्राधिकारी ने पाटित आयातों के हिस्से में वृद्धि इन आयातों की कीमतों, घरेलू उद्योग की कीमतों और अन्य देशों की कीमतों के बीच सहसंबंध की जाँच की है। संगत सूचना को नीचे सूचीबद्ध किया गया है :-

	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी-दिसम्बर 03 (जाँच अवधि)
माँग में बाजार हिस्सा %				
संबद्ध देश	0.22	5.84	14.03	31.39
अन्य देश	1.28	4.20	1.60	0.78
घरेलू उद्योग	60.69	62.94	58.62	49.19
आयातों की पहुँच कीमतें				
संबद्ध देश	683.75	282.16	113.67	105.07
अन्य देश	116.07	80.71	43.24	36.65
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत	****	****	****	****

25. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमत में काफी अधिक गिरावट आई। भारत में माँग में संबद्ध देशों के हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई। इसी के साथ घरेलू उद्योग के हिस्से और उसके बिक्री मूल्य में कमी आई थी। संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत में कमी और उनके बाजार हिस्से में वृद्धि तथा घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से और बिक्री कीमत के बीच प्रत्यक्ष सह-संबंध है।

भारत में उत्पादन में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

26. संबद्ध देशों से पाटित आयातों में घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई। पाटित आयातों की मात्रा में भारत में घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में वृद्धि हुई है; जैसाकि निम्नांकित तालिका से देखा जाएगा :-

	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जाँच अवधि)
उत्पादन के संबंध में चीन से हुए आयात	0.00	6.96	19.55	48.36
उत्पादन के संबंध में ताइवान से हुए आयात	0.27	0.69	1.57	6.69
उत्पादन के संबंध में संबद्ध देश के आयात	0.27	7.65	21.12	55.06
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन		2775	176	161

27. उपर्युक्त जाँच के आधार पर, अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों का भारतीय बाजार माँग में हिस्सा बढ़ा है।

आयात कीमत में वृद्धि

28. जैसा कि निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है, वर्ष 2000-01 से जांच अवधि तक संबद्ध देशों की आयात कीमत के विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध वस्तु की आयात कीमत में 83.54% की भारी कमी हुई है।

रुपए प्रति कि.ग्रा.	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जांच अवधि)
सीआईएफ निर्यात कीमत- चीन		215.23	86.25	81.84
सूचीबद्ध		100.00	40.07	38.02
सीआईएफ निर्यात कीमत- ताइवान	501.47	123.44	90.59	87.72
सूचीबद्ध	100	24.62	18.06	17.49
संचयी रूप से संबद्ध देश	501.47	206.94	86.57	82.56
सूचीबद्ध	100	41.27	17.26	16.46
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन- चीन		0	-60	-5
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन-ताइवान		-75	-27	-3
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन- संचयी रूप से संबद्ध देश		-59	-58	-5

आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं की कीमतों में कुछ वर्षों में अलग-अलग एवं संचयी रूप से तीव्र गिरावट आई है।

कीमत कटौती

29. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और आयातित सामग्री की पहुँच कीमत के लिए तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की कीमतें कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित की गई थीं। चीन एवं ताइवान से आयातों की पहुँच कीमत निर्धारित करने के लिए, प्राधिकारी ने प्रयोज्य मूल सीमाशुल्कों और अन्य प्रभारों को सीआईएफ मूल्य में जोड़ा है। आयातों की पहुँच कीमत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना

रुपए प्रति कि.ग्रा.	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी-दिसम्बर, 03 (जांच अवधि)
सीआईएफ कीमत- चीन	0	215	86	82
पहुँच मूल्य- चीन	0	293	113	104
सी आई एफ कीमत- ताइवान	501	123	91	88
पहुँच मूल्य ताइवान	684	168	119	112

घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्तियाँ	****	****	****	****
चीन से कीमत कटौती				60-75%
ताइवान से कीमत कटौती				60-75%

से यह पता चला है कि जाँच अवधि के दौरान संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तुओं को भारतीय बाजार में ऐसी कीमतों पर बेचा गया था जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम थी। इस प्रकार पाटित उत्पाद घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती कर रहे थे।

कम कीमत पर बिक्री

30. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की लाभकारिता में काफी कमी आई है जो पाटित आयातों के कारण हुई कम कीमत पर बिक्री के कारण है। यह भी नोट किया जाता है कि कम कीमत पर बिक्री क्षति का मूल्यांकन करने के लिए एक महत्वपूर्ण सूचक है। प्राधिकारी ने घरेलू समान उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग के लिए गैर क्षतिकारक कीमत का निर्धारण किया है और इसकी तुलना कम कीमत पर बिक्री की सीमा का परिकलन करने के लिए सम्बद्ध आयातों के पहुँच मूल्य के साथ की है। विश्लेषणों से मालूम होता है कि काफी कम कीमतों पर बिक्री की गई है (250 प्रतिशत से अधिक) जिससे घरेलू उद्योग का क्षति हुई है। इस प्रकार अनंतिम रूप से यह निर्धारण किया गया है कि सम्बद्ध देशों से आयात पाटित कीमतों पर किए गए थे और उसी समय घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारक कीमत से बहुत कीमतों पर बिक्रियाँ की गई थी।

घरेलू उद्योग की स्थिति

प्रारंभिक टिप्पणियाँ

31. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने ऐसे सूचकों पर विचार किया है जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जिसे उत्पादनों, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक लाभकारिता, निवल बिक्री, वसूली मार्जिन और पाटन की मात्रा आदि जो अप्रयुक्त नियम के अनुबंध 1(iv) के अनुसार है।

बिक्रियों की मात्रा

वर्ष	2000-01	2001-02	2002-03	जनवरी- दिसम्बर, 03 (जाँच अवधि)
बिक्रियां (मी. टन)	****	****	****	****
रुख	100	127	129	129
माँग मी. टन	645	787	864	1061

सूचकांक	100	122	134	165
मांग का बाजार हिस्सा	60.69	62.94	58.62	49.19

32. उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा वर्ष 2002-2003 तक बढ़ रही थी। तथापि, बिक्री मात्रा में जांच अवधि के पश्चात एक मामूली गिरावट प्रदर्शित हुई है। कम्पनी की बिक्री मात्रा वर्ष 2000-2001 के दौरान 391.16 मी.टन थी तथा 29.41% वृद्धि प्राप्त करने के बाद यह वर्ष 2002-2003 में 506.20 मी. टन तक पहुंच गई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2002-2003 में 506.20 मी.टन तक पहुंचने के बाद बिक्री में जांच अवधि के दौरान 505.49 मी. टन तक मामूली रूप से गिरावट आई जबकि उत्पाद की मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई थी। इसके परिणामस्वरूप क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई जबकि संबद्ध देश के आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई।

लाभ

	2000-01	2001-02	2002-03	जन-दिस, 03 (जांच अवधि)
कुल लाभ/हानि (लाख रूपए)	****	****	****	****
सूचकांक	100	90	30	-9

33. दोनों बाजारों अर्थात् ओईएम और खुदरा या उसके बाद का बाजार को साथ ले कर यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार, अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संबद्ध देशों से आयातों से घरेलू उद्योग पर घरेलू बाजार में अपनी कीमतें कम करने के लिए दबाव पड़ा है जिससे उसकी लाभप्रदता पर इस हद तक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है कि घरेलू उद्योग को क्षति अवधि एवं जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में अत्यधिक गिरावट सहना पड़ा है। उसने घाटा प्रदर्शित किया है। उपर्युक्त के मद्देनजर अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि लाभ में कमी के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक

34. यह नोट किया गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की आयात कीमतें लगातार कम हो रही हैं। यह देखा गया है कि अन्य कारकों के साथ-साथ आयातों का स्तर घरेलू कीमतों को निर्धारित करता है। यह प्रतीत होता है कि घरेलू बाजार में बाजार कीमतें पाटित कीमतों पर पाटित आयातों की अत्यधिक मात्रा के कारण कम हुई हैं। इसके अतिरिक्त यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से कीमत कटौती बहुत अधिक है और संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण अत्यधिक कीमत ह्रास हुआ है। इसके अतिरिक्त, संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री भी बहुत अधिक है।

उत्पादन

35. घरेलू उद्योग का उत्पादन निम्नानुसार था:-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन-दिस, 03 (जाँच अवधि)
उत्पादन	मी.टन	540	600	574	605
सूचीबद्ध	%	100	111.14	106.23	111.97

क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में कमीबेशी होती रही थी। यद्यपि 2000-2001 से 2001-2002 तक घरेलू उद्योग ने 11.14% की वृद्धि प्राप्त की तथापि जाँच अवधि तक उत्पादन में समग्र वृद्धि मात्र 11.97% थी। इस मापदंड के आधार पर अनन्तिम रूप से कोई क्षति नहीं हुई है।

क्षमता एवं क्षमता उपयोग

36. जैसा कि नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है, घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग ने उत्पादन के समान रुख प्रदर्शित किया है:-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन.-दिस, 03 (जाँच अवधि)
क्षमता	मी.टन	652	652	652	652
क्षमता उपयोग	%	84.42	91.97	87.91	92.66

पिछले वर्षों की तुलना में घरेलू उद्योग की क्षमता समान रही जबकि क्षमता उपयोग वर्ष 2000-2001 में 84.42% से बढ़ कर जाँच अवधि तक 92.66% हो गया। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को इस मापदंड के कारण कोई क्षति नहीं हुई है।

उत्पादकता

घरेलू उद्योग की उत्पादकता ने निम्नलिखित रुख प्रदर्शित किया:-

उत्पादकता	2000-01	2001-02	2002-03	जन-दिस, 03
कर्मचारियों की संख्या	****	****	****	****
प्रति कर्मचारी	****	****	****	****

उत्पादकता				
सूचीबद्ध	100	105	101	108

37. यह नोट किया गया है कि जाँच अवधि तक घरेलू उद्योग की उत्पादकता में 8% की वृद्धि हुई। उत्पादन में वृद्धि और कर्मचारियों की संख्या में अनुपात से कम वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग की प्रति कर्मचारी उत्पादकता में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि इस मापदंड के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

38. तथापि, यह नोट किया गया है कि उत्पादकता में वृद्धि होने के बावजूद क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई। उत्पादकता में वृद्धि होने से घरेलू उद्योग को अपनी लाभ-प्रदता को बढ़ाने में सक्षम होना चाहिए था परंतु यह प्रतीत होता है कि पाटित आयातों के परिणाम स्वरूप लाभों में कमी हुई है।

निवेश पर आय

39. घरेलू उद्योग की लगाई गई पूँजी पर आय की प्रवृत्ति निम्नानुसार है:-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन.-दिस, 03
कुल अचल परिसंपत्तियां	लाख रुपए	*****	*****	*****	*****
कार्यशील पूँजी	लाख रुपए	*****	*****	*****	*****
लगाई गई पूँजी	लाख रुपए	*****	*****	*****	*****
ब्याज के बाद लाभ-हानि	लाख रुपए	*****	*****	*****	(****)
लगाई गई पूँजी पर आय	%	*****	*****	*****	(****)
लगाई गई पूँजी पर आय	सूचीबद्ध	100	75.11	15.67	-7.55

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की लगाई गई पूँजी पर आय में अत्यधिक गिरावट आई है (क्षति अवधि के दौरान गिरावट लगभग 107% है)। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को इस मापदंड के कारण क्षति हुई है।

रोजगार एवं वेतन

40. घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग के वेतन में सामान्य वृद्धि प्रदर्शित हुई है जबकि प्रति इकाई उत्पादन वेतन के मामलों में भी वृद्धि हुई है। प्राधिकारी इस मापदंड के कारण क्षति न होने का निष्कर्ष निकालते हैं।

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन-दिस, 03
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	****	****	****	****
सूचकांक		100	104	104	104
प्रति किग्रा. उत्पादन में कर्मचारियों की संख्या	किग्रा./व्यक्ति	****	****	****	****
सूचकांक		100	105	101	107
वेतन	लाख रु.	****	****	****	****
सूचकांक		100	149	153	164
प्रति किग्रा. उत्पादन वेतन	रु./किग्रा.	****	****	****	****
सूचकांक		100	134	146	146

नकद प्रवाह पर प्रभाव

41. यद्यपि, याचिकाकर्ता कुछ अन्य उत्पादों के उत्पादन में भी शामिल एक बहु-उत्पाद कम्पनी है, तथापि जाँच अवधि में विचाराधीन उत्पाद कम्पनी के प्रचालनों का 75% था। इस प्रकार, याचिकाकर्ता कम्पनी का नकद प्रवाह शामिल उत्पाद से संबंधित नकद प्रवाह प्रचालनों को प्रदर्शित करता है। घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह की जाँच करने के बाद यह नोट किया गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह में अत्यधिक गिरावट आई।

लाख रुपए	2000-01	2001-02	2002-03	जन-दि, 03
नकद लाभ	****	****	****	****
सूचकांक	100	92	53	11
नकद प्रवाह		****	****	****
सूचकांक	100	42.6	40.5	-38.2

42. इस प्रकार उपर्युक्त से यह नोट किया गया है कि विचाराधीन अवधि में घरेलू उद्योग के नकद लाभ और नकद प्रवाह की स्थिति में अत्यधिक गिरावट आई। यह गिरावट भारतीय बाजार में पाटन के परिणाम स्वरूप लाभों में गिरावट के कारण थी। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को इस मापदण्ड के कारण क्षति हुई है।

माल सूची

43. घरेलू उद्योग के तैयार उत्पाद की माल सूची निम्नानुसार रही है:

किग्रा. में	2000-01	2001-02	2002-03	जन.-दिसम्बर, 03
प्रारंभिक स्टॉक	****	****	****	****
सूचकांक	100	117	351	383
अंतिम स्टॉक	****	****	****	****
सूचकांक	100	298	293	289
औसत स्टॉक	****	****	****	****
सूचकांक	100	215	320	332

प्राधिकारी पाते हैं कि शामिल अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के तैयार उत्पाद की माल सूची में वृद्धि हुई। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को इस मापदंड के कारण क्षति हुई है।

पूँजी निवेश उगाहने की क्षमता

44. रिकॉर्डों की जाँच के बाद यह नोट किया गया है कि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की पूँजी उगाहने में किसी अक्षमता को नहीं पाया। अतः प्राधिकारी इस मापदण्ड के कारण कोई क्षति न होने का निष्कर्ष निकालते हैं।

वृद्धि

45. सारणी में निम्नानुसार प्रदर्शित है कि घरेलू उद्योग ने अनेक मापदण्डों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि का सामना किया है। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष दिया गया कि घरेलू उद्योग को इस मापदण्ड के आधार पर क्षति हुई।

	2000-01	2001-02	2002-03	जन.-दिस, 03
बिक्री मी. टन	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति		26.60	2.22	0.14
पीवीटी लाख रुपए	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति		(10.32)	(66.73)	(131.91)
मांग में बाजार हिस्सा	61	60.08	58.62	49.19
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति		0.25	(3.66)	(16.0)
तैयार-वस्तुओं का औसत स्टॉक, मी.टन	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति		115.53	48.57	3.78
बिक्री कीमत रुपए/किग्रा.	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति				
लगाई गई पूँजी पर आय				
घरेलू और निर्यात बिक्री पर विचार करते हुए	****	****	****	(****)
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति		(24.89)	(79.13)	(148.16)

प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग ने अनेक मापदण्डों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि का सामना किया है। अतः अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष दिया गया कि घरेलू उद्योग को इस मापदण्ड के आधार पर क्षति हुई।

निष्कर्ष

46. आयातक द्वारा किये गए दावों की जांच

(i) गुणवत्ता के साथ-साथ मात्रा का उत्पादन करने की घरेलू उद्योग की सक्षमता के संबंध में आयातक द्वारा किए गए दावे के संबंध में यह नोट किया जाता है कि इन अनुरोधों से संबंधित आंकड़ों का निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आंकड़ों/सूचना में किए गए कुछ संशोधन को छोड़कर इन दावों को खारिज करने का कोई न्यायसंगत कारण प्रतीत नहीं होता है।

(ii) भारत में संबद्ध वस्तु की मांग और आपूर्ति के अन्तर के बारे में आयातक के तर्क के साथ-साथ भारत बाजार में एकाधिकार स्थापित करने के संबंध में यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद की निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आकलित मांग क्षति अवधि में 1060 के दायरे में है। यह भी नोट किया जाता है कि अकेले आवेदक की क्षमता 652 मी. टन है अतः भारत में संबद्ध वस्तु की आपूर्ति और मांग में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। इसके अलावा उत्पाद के स्वरूप उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित संयंत्र और मशीनों और उसमें अपेक्षित निवेश को देखते हुए यह नहीं लगता है कि यदि उत्पाद के लिए बाजार पाटित आयातों से मुक्त रहे तो घरेलू उद्योग मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं होगा। तथापि, पाटन और उत्पादकता में भारी कमी की स्थिति में हो सकता है कि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता में वृद्धि करना न चाहे। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के बाजार में क्षति अवधि के दौरान मांग में 65% की वृद्धि हुई है। यद्यपि मांग में भारी वृद्धि हुई है, लेकिन घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी कमी आयी है जबकि ऐसी स्थिति में सुधार की उम्मीद की जा सकती थी।

(iii) यह नोट किया जाता है कि यद्यपि कंट्री क्राफ्ट, जो कि संबद्ध वस्तु का आयातक है ने ताइवान के प्रमुख उत्पादक ताइवान से वस्तुओं के आपूर्तिकर्ता होने का दावा किया तथापि ताइवान इकोनामिक एंड कल्चर सेंटर ने प्रारंभिक तौर पर दावा किया था ताइवान से वस्तुओं का आयात नहीं किया जा रहा है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

47. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र स्तर पर और भारत में संबद्ध वस्तु की कुल मांग के संबंध में भी भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण कीमत प्रभाव पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में मंदी कीमत कटौती और कम कीमतों पर बिक्री हुई हैं। कटौती मार्जिन और कीमत मंदी का निर्धारण किया गया है और इसे अत्यधिक माना गया है। यह भी नोट किया है कि बिक्री मात्राओं में धीमी वृद्धि, वित्तीय निष्पादन में लगातार विकृति, मांग के बाजार हिस्से में गिरावट (वर्ष 2001-2002 तक वृद्धि होने के बाद भारी गिरावट), जाँच अवधि के दौरान घनात्मक कीमत कटौती, घनात्मक कीमत मंदी, वर्ष-दर-वर्ष आधार पर लगाई गई पूँजी पर आय में गिरावट, औसत भण्डारों में वृद्धि आदि से क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में भी भारी विकृति प्रदर्शित होती है। घरेलू उद्योग के निष्पादन में, वर्ष 200-2001 और जाँच अवधि के

बीच तुलना को देखते हुए, उत्पाद, बिक्रियों, क्षमता उपयोग, प्रति कर्मचारी उत्पादकता की दृष्टि से सुधार हुआ है। तथापि इसे इस तथ्य की दृष्टि से सुधार हुआ है। तथापि, इसे इस तथ्य की दृष्टि से संतोषजनक नहीं माना जा सकता है कि क्षति अवधि के दौरान अनेक मापदंडों से अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित होते हैं, जिनकी परिणति जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के घाटा उठाने के रूप में हुई है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर, अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ज. कारणात्मक संबंध

(क) भूमिका

48. घरेलू उद्योग द्वारा वहन की गई क्षति के कारणों संबंधी निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए तथा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुसार तथा यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के तहत नियम-11 के अंतर्गत अनुबंध-11 के पैरा (V) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उद्योग की स्थिति पर उनके परिणामों की जांच की। पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारकों जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जांच की गई कि इन अन्य कारकों द्वारा वहन की गई संभाव्य क्षति पाटित आयातों के कारण तो नहीं थी।

(क) पाटित आयातों के प्रभाव

49. वर्ष 2000-2001 तथा जांच अवधि के बीच संबद्ध देशों से पाटित आयात मात्रा में भारी रूप से 3532% तक बढ़े (पिछले वर्ष से 100% अधिक तथा आयातों के बाजार हिस्से में छह गुने तथा जांच अवधि में जांग में 0.22% से 31% तक) जहाँ तक निर्यात कीमतों का संबंध है उसमें सम्पूर्ण विचाराधीन अवधि के दौरान पर्याप्ततः गिरावट आई तथा जांच अवधि के दौरान दस गुने औसत से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई। इसके अलावा, कटौती संबंधी आंकड़े पाटित आयातों के सम्पूर्ण प्रभाव को नहीं दर्शाते क्योंकि घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास हुआ। यह सब एक साथ कीमत में कमी, बाजार हिस्से में कमी तथा घरेलू उद्योग को घाटे के रूप में घरेलू उद्योग की स्थिति में गिरावट के साथ हुआ।

पाटित आयातों की कीमतें समूची विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों से कम रही थी तथा उन पर एक दबाव बनाया जिससे घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत के बढ़ने के बावजूद कीमतें घटाने हेतु बाध्य होना पड़ा। अतः अनंतिम रूप से यह माना गया कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई।

अन्य कारकों के प्रभाव

(क) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन

50. जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आवेदक के अलावा भी अन्य घरेलू उत्पादक थे। यद्यपि उन्होंने निर्यातक प्रश्नावली के रूप में तथा ढंग से सूचना प्रस्तुत नहीं की है। तथापि, प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध कराई गई सीमित सूचना की जांच से यह अनंतिम रूप से निष्कर्ष दिया जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तथा उनके प्रचालन निष्पादन में गिरावट आई।

(घ) मांग में संकुचन अथवा खपत के ढंग में परिवर्तन

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समूची मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इसके उलट, क्षति अवधि के दौरान समूची मांग पर्याप्त रूप से बढ़ी। प्राधिकारी का अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष है कि खपत के ढंग में कोई गोचर परिवर्तन नहीं हुआ है।

(ङ.) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

52. उपलब्ध सूचना के अनुसार संबद्ध देश से इतर देशों के मूल की संबंधित वस्तुओं की कुल आयात मात्रा न्यूनतम से कम है तथा इसलिए उन्हें अनंतिम रूप से घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव डालने वाला नहीं माना गया है।

(च) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों तक उनके बीच प्रतिस्पर्धा

53. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं का एकल बाजार है जहां संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पादों के सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। आगे प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के समान वाणिज्यिक ग्रेडों तक विनिर्देशन को पूरा करने के लिए की जाती है। आगे नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं तथा समान अनुप्रयोग/अंतिम उपयोग के लिए प्रयोग की जाती हैं।

(छ) घरेलू उद्योग की प्रौद्योगिकी निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता में सुधार

54. याचिकाकर्ता के अभिलेखों की जांच के आधार पर प्राधिकार अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि प्रौद्योगिकी में सुधार, घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला एक संगत कारक नहीं रहा है।

55. आगे यह नोट किया जाता है कि विभिन्न आर्थिक संकेतकों के संबंध में विभिन्न निष्पादन का निर्धारण केवल घरेलू बिक्री के संबंध में किया गया है। अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा वहन की गई वास्तविक क्षति, घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन का परिणाम नहीं हो सकती।

56. जहां तक उत्पादकता में सुधार का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान उत्पादन प्रति कर्मचारी प्रति वर्ष जैसा उत्पादकता मापक क्षति अवधि के दौरान लगभग समान बने रहे। जांच के आधार पर प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि उत्पादकता स्वयं घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं है।

(ज) कारण-कार्य-संबंध पर निष्कर्ष

57. वर्ष 2000-2001 तथा जांच अवधि के बीच आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि से मांग/खपत में आयातों के हिस्से में वृद्धि होती है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्सों में वर्ष 2000-2001 तथा 2001-2002 के बीच वृद्धि दर्ज करने के बाद वर्ष 2000-2001 तथा जांच अवधि के बीच गिरावट आई।

पाटित आयातों का बाजार हिस्सा अवधियों के दौरान क्रमशः बढ़ता गया था। एक प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा काफी कम हो गया था। सम्बद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी। एक प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग ऐसी कीमत पर उत्पाद की बिक्री करने से वंचित हो गया था जिससे वह अपने उत्पादन की लागत वसूल कर सकता और

उचित लाभ अर्जित कर सकता। इसके परिणामस्वरूप लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर लाभ के अनुसार घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में काफी हानि हुई।

58. उपर्युक्त विश्लेषण के कारण जिससे पाटित आयातों के क्षतिकारक प्रभावों से घरेलू उद्योग की स्थिति पर ज्ञात कारकों के प्रभावों का अलग-अलग विवेचन हुआ है अनंतिम रूप से यह परिकलन किया गया है कि ये अन्य कारक इस तथ्य के प्रति गलत नहीं हो सकते कि पाई गई वास्तविक क्षति पाटित आयातों के कारण हो सकती है।

59. इसलिए अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सम्बद्ध देशों में उद्गमित पाटित आयातों के कारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थों के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(झ) घरेलू उद्योग का हित

60. सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो और भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित करना है जो देश के सामान्य हित में है।

61. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों के लगाने से सम्बद्ध वस्तुओं का प्रयोग कर के विनिर्मित उत्पादों की कीमत के स्तर प्रभावित हो सकते हैं और इसके फलस्वरूप इन उत्पादों की संबधित प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव हो सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा इन्हीं पाटनरोधी उपायों से कम नहीं हो जाएगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ रूक जाएँगे, घरेलू उद्योग का पतन रूकेगा और इससे सम्बद्ध वस्तु के ग्राहकों को अधिक व्यापक पसन्द उपलब्ध बनाए रखने में सहायता प्राप्त होगी।

62. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से सम्बद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए ग्राहकों को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ताओं के पास अब भी आपूर्ति के दो अथवा अधिक स्रोत बने रहेंगे।

() निष्कर्ष

63. प्राधिकारी उपर्युक्त पर विचार करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि :-

(क) सम्बद्ध वस्तुएँ सम्बद्ध देशों से इनकी सामान्य कीमत से कम कीमत पर निर्यात की गई हैं।

(ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;

(ग) सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों द्वारा संचयी रूप से क्षति हुई है।

64. प्राधिकारी घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण होने तक अनंतिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाने को आवश्यक

समझते हैं। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपर्युक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के समान अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जो यदि लगायी जाएगी तो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति रूक जाएगी। क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना जाँच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कंपनी की गैर क्षतिकारक कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है।

65. तदनुसार, प्राधिकारी यह सिफारिश करते हैं कि अनंतिम पाटनरोधी शुल्क अंतिम निर्धारण किए जाने तक चीन जनवादी गणराज्य और चीनी ताईपेई के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 5806 के अंतर्गत आने वाले नेरो वोवेन फैब्रिक्स (हुक और लूप टेप पेस्टनर अथवा वेलप्रो टेप्स के रूप में भी ज्ञात) के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लगाए जाएँ। पाटनरोधी शुल्क निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और केन्द्र सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लगाए जाने वाले प्रति किलोग्राम आयातों के पहुँच मूल्य के बीच अंतर के बराबर होगी जो निम्नलिखित देशों से उद्गमित अथवा निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 58 के भीतर आने वाली सम्बद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर लगाई जाएगी :-

क्र. सं.	शीर्ष	वस्तुओं का विवरण	विनिर्दिष्टता	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भित राशि	मापन की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	5806	नेरो वोवेन फैब्रिक	कोई विनिर्दिष्टता	कोई देश	चीनी ताईपेई	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	7.61	कि.ग्रा.	अम. डॉलर
2.	5806	नेरो वोवेन फैब्रिक	कोई विनिर्दिष्टता	चीनी ताईपेई	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	7.61	कि.ग्रा.	अम. डॉलर
3.	5806	नेरो वोवेन फैब्रिक	कोई विनिर्दिष्टता	कोई देश	चीन जन. गण.	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	8.02	कि.ग्रा.	अम. डॉलर
4	5806	नेरो वोवेन फैब्रिक	कोई विनिर्दिष्टता	चीन जन. गण.	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	8.02	कि.ग्रा.	अम. डॉलर

(ट) अगली प्रक्रिया

66. प्रारंभिक जांच परिणामों की अधिसूचना के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी :-

(क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पक्षकारों से इन जांच परिणामों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ आमंत्रित करते हैं और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा;

(ख) संबंधित ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारी द्वारा अलग से पत्र लिखे जा रहे हैं जो अपने विचारों की प्रारंभिक जांच परिणामों की तारीख से 40 दिन के

भीतर जानकारी दे सकते हैं। अन्य कोई हितबद्ध पक्षकार भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिन के भीतर अपने विचारों की सूचना दे सकता है;

(ग) प्राधिकारी मौखिक अनुरोध करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को अवसर प्रदान करेंगे जिन्हें उसके बाद लिखित में प्रस्तुत करना होगा;

(घ) प्राधिकारी आवश्यक समझी जाने वाली सीमा तक आगे जाँच पड़ताल करेंगे,

(ङ) प्राधिकारी अंतिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों का प्रकटन करेंगे।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, २३३३ पब्लिश एवं गिर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)
NOTIFICATION

New Delhi, the 10th January, 2005

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Narrow Woven Fabrics originating in or exported from the China PR and Chinese Taipei.

No. 14/24/2003-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:-

(i) On 9th June 2004, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, issued a public notice (initiation notification) publicised in the Gazette of India, initiating an anti dumping investigation with regard to imports of narrow woven fabrics originating in or exported from China PR and Chinese Taipei (Also referred to as subject countries). The Anti dumping proceeding was initiated following a complaint received from M/s Sky Industries Ltd, Mumbai (the applicant) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. The complaint contained evidence of dumping of the said product and of material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

(ii) Before initiation, the Authority notified the Embassies/High Commissions of subject countries in India about the receipt of fully documented petition made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporting producers, importers, industry associations, embassies of the countries concerned and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iv) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to all the known exporters and Embassies of subject countries in India. According to sub-rule (4) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassies of subject countries in India and other interested parties. The Embassies/High Commissions of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time

(v) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from subject countries.

1. M/s. Tri Hook, Chinese Taipei
2. Taiwan Special Tape Company, Chinese Taipei
3. Zhejiang Hongwing Weaving Co. Ltd, China PR
4. Chico Textile Industries Ltd, Chinese Taipei.
5. Taiwan Joca Corporation, Chinese Taipei

(vi) None of the exporters have responded to the exporter's questionnaire and notice of initiation. None of the importers except M/s Country crafts have responded to the importers questionnaire. However, they have not submitted any non confidential copy of the confidential information to the Authority. Their submissions have been taken into account subject to their being relevant to the investigation.

(vii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(viii) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(ix) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st January 2003 to 31st December 2003 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury

analysis covered the period from 1st April 2000 to the end of period of investigation.

(x) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of preliminary determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the best cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

B. Product under Consideration.

2. The Product under consideration in the present investigations is "narrow woven fabric having pile weave, made up of man made fibers, used as a fastening tape" (henceforth also referred to as subject goods). In market parlance, the subject goods are known by various synonyms such as "Hook & Loop Tape Fasteners", "Velcro Tapes", "Fastening Tapes", "Fasteners" etc. The distinguishing feature of the product is "pile weave". The subject goods are described in terms of Peel Strength, Shear Strength and Light Fastness. Hook and Loop fasteners are generally made from man made fibers (yarns) nylon (Nylon 6 and Nylon 6,6), polyester etc. The product under consideration is produced in sizes typically varying between 12mm to 125mm of width. The unit of measurement prescribed for the product is weight (in terms of kg. Or MT). Further, while the product is sold in the market place in terms of length of the product (measured in meters) and the associated costs and prices of various product types vary with width, the same becomes almost homogenous when converted into weight. The Designated Authority holds that considering the product in terms of its weight, expressed in terms of kg. or MT would be appropriate for the present purpose. The major uses of the subject goods are in industries such as garment industries, surgical & orthopedic apparatus manufacturing, shoes & footwear manufacturing, luggage/bags manufacturing, toys, automobile upholstery and various other industrial segments. Narrow Woven fabric is classified under customs Sub heading 580610 of the Customs Tariff Act 1975. However as stated in the initiation notification, the customs classification is indicative in nature and is in no way binding on the scope of the investigation.

C. Like Article.

3. The petitioner has claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. There is no significant difference in the subject goods

produced by the petitioner and those exported from subject countries. Petitioner claims that the two are technically and commercially substitutable. Rule 2 (d) relating to the definition of like article specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority. None of the interested parties have raised any arguments with regards to the issue of Like article. On basis of the examination, the Authority notes that subject goods produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those imported from subject countries and to those sold in the market of exporting countries. In view of the above the Authority holds that narrow woven fabrics produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject countries are like articles within the meaning of the rules.

D. Domestic Industry

4. There are four producers of subject goods in India. M/s Sky Industries Ltd., Mumbai, has filed the application. M/s. Magic Flex Pvt. Ltd., Delhi and Siddharth Filament Pvt. Ltd. have supported the application filed by the applicant. Both these companies have filed some information also relating to injury after initiation of investigations. The Authority notes that production by M/s Sky Industries Ltd. constituted significantly more than 50% of the total domestic production of like article in India. The Authority after examining the above, determines that the applicant is a major producer of subject goods in India accounting for a major proportion of the production of the subject goods in India and therefore the applicant constitutes a domestic Industry within the meaning of the rule 2(b) and it satisfies the criteria of standing to file the petition in terms of Rule 5(3)(a) of the Rules

E. De-minimus.

5. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by DGCIS. After examining the data, The Authority holds that imports from imports from all the subject countries are above de-minimus levels in terms of volume of imports.

F. Dumping.

6. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)";

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

7. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). None of the exporters have responded to the initiation and questionnaire in any form and consequently, they have been treated as uncooperative in this investigation.

F (1) China PR

(a) Cooperation

8. None of the known exporters has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire.

(b) Normal Value & Export Price:

9. The Authority notes that the none of the exporters have submitted any information as required under the exporter's questionnaire. It is also noted that they have also not supplied any information rebutting the presumptions as mentioned in the 8(3) of the Annexure I of the Anti Dumping Rules pertaining to Non market economy. As no information has been submitted under various

Appendixes, the Authority cannot determine whether the domestic sales have been made in the ordinary course of trade..

10. In the absence of relevant information from the exporter, the Authority has constructed the normal value as per para 7 of the Annexure 1 of the AD Rules for all producers/exporters from China PR. Export price at the ex. factory level has been determined by taking weighted average export price to India after taking into account total volume of imports from China PR with adjustments.

(c) Dumping Margin:

11. In accordance with Rule 6(iv) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of weighted average normal values with the weighted average export price. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 355 %.

F (2) Chinese Taipei

(a) Cooperation

12. None of the known exporters or exporters who made themselves known after the initiation, has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. Subsequent to initiation of the investigations, Taiwanese Economic and Cultural centre on behalf of their government asked the authority to re ascertain the Chinese Taipei exports to India as their trade statistics did not show any exports to India during the POI. They also requested the Authority to terminate the investigation against Chinese Taipei as no imports have been effected into India from that country. The Authority notes that it had initiated the subject investigation after ascertaining the transaction wise import information from DGCIS. However, after receiving the letter from Chinese Taipei, the Authority ascertained the imports from one of the inland ports of the Delhi (ICD Tughlakabad) by requesting for transaction wise imports from that port of the subject goods originating from Chinese Taipei. After examining the import transactions, it was informed to the Authority that there were substantial number of transactions evidencing imports of subject goods from that country. Accordingly a copy of the import statement made from Chinese Taipei along with the names of the exporters and B/E numbers with dates were forwarded to the Chinese Taipei Authorities. As, no further communication has since been received from Chinese Taipei Authorities till date, it is presumed that the information pertaining to the import data of subject goods sent by the authority has been accepted by them.

(b) Normal Value & Export Price:

13. The Authority notes that none of the exporters have submitted any information as required under the exporter's questionnaire. As no information has been submitted under various Appendixes, the Authority can not determine whether the domestic sales have made in the ordinary course of trade. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8).

14. Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. Export price at the ex-factory level has been determined by taking their weighted average export price to India with adjustments.

(d) Dumping Margin:

15. In accordance with Rule 6(iv) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of weighted average normal values with the weighted average export price. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 298%.

Country	Name of the Producer/exporter	Normal value	Export Price	D.M%
China PR	All Producers/exporters	****	****	355
Chinese Taipei	All Producers/exporters	****	****	298

G. InjuryCumulative assessment

16. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules provide that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the

- designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:
 - (a) the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
 -
 - (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

The Authority finds that

- i) the margins of dumping from each of the subject country are more than 2% (de-minimus) as may be seen from the earlier paragraphs;
- ii) the volume of imports from each of the subject countries is more than the 3%;
- iii) the domestic product and product exported from subject countries into India are like articles;
- iv) It is noted that imported products and domestic like products are being interchangeably used. Evidence of imports by various parties and correlation of the same with customer wise sales of the domestic industry makes it evident that there are a number of parties who have resorted to purchase from the domestic industry and imports from subject countries. It is further noted that subject goods exported by various countries compete in the same market;
- v) The subject goods supplied by various producers are being marketed in India during the same periods through comparable sales channels
- vi) Price undercutting is positive and significant in respect of both China and Taiwan.
- vii) The domestic producer and exporters in the subject countries are selling the product to the same category of consumers.

17. In view of the above, it is held that cumulative assessment of impact of imports on the domestic industry would be appropriate in the present case.

Domestic Consumption/Demand

18. For the calculation of the domestic consumption/demand of the product under consideration, the Authority has added the sales volume of the domestic industry to the total imports into India. The Authority has considered data provided by the DGCI&S on transaction to transaction basis. The Authority notes that during the course of investigation, the petitioner has provided a number of bills of entries in respect of imports into India of the subject goods from subject countries. It is found that a number of these imports are not reflected in the transaction wise import data made available by the DGCI&S. It is thus evident that full volume of imports is not reflected in the transaction wise import data. Authority has added these imports in the import data made available by the DGCI&S, as these import transactions are supported with bills of entry, commercial invoice, packing list, certificate of origin, etc. The Authority is also processing the transaction wise information pertaining to 4 digit level of the subject goods to examine whether information pertaining to subject goods are also being imported at different heads. As that exercise is progressing, the Authority has provisionally determined the import volumes of the subject goods from the transaction wise DGCIS information pertaining to 6 digits level and transaction wise bills of entries pertaining to the imports of subject goods as made available to the Authority from different ports which were not reported in the DGCIS data. Based on the above exercise (import figures are at best on the conservative side and thus provisional), it is seen that the domestic demand or consumption of the subject goods increased significantly as shown in the table below.

Demand				
	2000-01	2001-02	2002-2003	Jan-Dec, 03 POI
Imports – China MT	0	42	112	293
Indexed		100	269	700
Imports – Taiwan MT	1	4	9	40
Indexed	100	289	625	2818
Domestic Industry Sales MT	****	****	****	****
Indexed	100	127	129	129
Captive Consumption	0	0	0	16
Sales of other Producers	****	****	****	****
Indexed	100	87	91	88
Other Imports MT	8	33	14	8
Indexed	100	401	168	100
Demand (Including Captive)	645	787	864	1061
Indexed	100	122	134	165

The Authority notes that demand of the product under consideration has been increasing over the years. . However, sales of the domestic industry showed a sluggish growth and achieved only 25% growth during the injury period. In fact, the sales of the domestic industry declined in the POI as compared to preceding year. At the same time demand of the product showed 65% growth considering the very small captive consumption and 62% growth in market demand excluding the captive consumption. It is, thus, provisionally concluded that dumped imports could have prevented the domestic industry from increasing its sale in spite of increase in demand.

Imports originating in the subject country and other countries

Volume of imports

19. The Authority has collected transaction wise import data from DGCI&S over the years and the same along with actual bills of entries ~~not reported~~ in the DGCIS transaction wise data is relied upon to decide the actual volume of subject import into the country. The volume of dumped imports of the product under consideration from China PR, Taiwan and as also from other countries is as given in the table below:

	2000-01	2001-02	2002-2003	Jan-Dec, 03 (POI)
Imports –China PR- MT	0	42	112	293
Indexed		100	269	700
Imports–Taiwan MT	1	4	9	40
Indexed	100	289	625	2818
Total Subject Country Import MT	1	46	121	333
Indexed	100	3196	8434	23177
Total Imports MT	10	79	135	341
Indexed	100	817	1398	3533

The Authority finds that the import volumes from the subject countries increased significantly during the period under consideration. It can therefore be provisionally concluded that there has been steady and significant increase in volume of dumped imports over the period under consideration. Increases in imports have been more than increase in demand, resulting into decline in share of domestic industry.

Share of subject country in total imports:

20. Between 2000-2001 and the POI, it is noted that the share of dumped imports from subject countries increased and was substantial, as may be seen from the table below:

	2000-01	2001-02	2002-2003	Jan-Dec, 03 (POI)
Market Share in Imports				
China PR	0.00	52.93	83.09	85.72
Taiwan	14.87	5.25	6.65	11.86
Subject countries	14.87	58.18	89.74	97.58
Other Countries	85.13	41.81	10.26	2.42
Total	100	100	100	100
Share of China PR as a proportion to domestic production	0.00	6.96	19.55	48.36
Share of Taiwan as a proportion to domestic production	0.27	0.69	1.57	6.69
Share of China PR as a proportion to Known Consumption	0.00	5.31	12.99	27.58
Share of Taiwan as a proportion to Consumption	0.22	0.53	1.04	3.82

21. It is noted that imports of subject goods from the subject countries significantly increased over the years, resulting in significant increase in share of subject imports in relation to total imports of the subject goods into India. At the same time, share of other countries in imports into India declined significantly.

	2000-01	2001-02	2002-2003	Jan-Dec, 03 (POI)
Share of imports from				
China	0	52.93	83.09	85.72
Taiwan	14.87	5.25	6.65	11.86
Other Countries	85	41.815	10.26	13

Market Share of dumped imports in total demand

22. The Authority has examined the share of dumped imports from the subject countries in consumption in India. The Authority finds that share of subject countries, which was 0.22% in 2000-01 increased to 31.39% of the demand during the POI. Market share of imports from subject countries, domestic industry and others were as follows over the periods:

Market share in Demand %	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Domestic Industry	60.69	60.84	58.62	49.19
Trend	100	100.25	96.58	81.05
Imports – China PR	0.00	5.31	12.99	27.58
Imports – Taiwan	0.22	0.53	1.04	3.82
Subject Countries Total	0.22	5.84	14.03	31.39
Imports- Other Countries	1.28	4.196	1.604	0.78
Changes in market share – over period under consideration				
Dumped imports		2519	140	124
Other imports		229	-62	-52
Domestic industry		4	-7	-21.34

23. It is seen from the above that share of subject imports increased significantly. It would also be seen that the domestic industry lost significant market share over the years and during the POI. It is further noted that other countries imports are below de minimis level.

24. The authority examined the correlation between increase in share of dumped imports, prices of these imports, prices of domestic industry and prices from other countries. The relevant information is tabulated below.

	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Market share in Demand %				
Subject countries	0.22	5.84	14.03	31.39
Other countries	1.28	4.20	1.60	0.78
Domestic industry	60.69	62.94	58.62	49.19
Landed price of imports Rs/Kg				
Subject countries	683.75	282.16	113.67	105.07
Other Countries	116.07	80.71	43.24	36.65
Net selling price of the domestic industry	****	****	****	****

25. It would be seen from the above that the landed price of imports from the subject countries declined quite significantly. Share of subject countries in demand in India also increased significantly. At the same time, share of the domestic industry and its selling prices declined. There is direct co-relation between the decline in the landed price of subject imports, increase in their market and decline in market share & selling price of the domestic industry.

Market share of dumped imports with respect to production in India

26. Dumped imports from subject countries increased significantly in relation to production of the domestic industry. Volume of dumped imports has increased in relation to production of the domestic industry in India, as would be seen from the table below:

	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Imports from China in relation to Production	0.00	6.96	19.55	48.36
Imports from Taiwan in relation to Production	0.27	0.69	1.57	6.69
Subject country imports in relation to Production	0.27	7.65	21.12	55.06
Year by year change		2775	176	161

27. On the basis of above examination, it is provisionally concluded that dumped imports from subject countries increased their share substantially in Indian market demand.

Evolution of import price

28. As shown in the table below, cumulative analysis of subject country import price from 2000-01 to POI shows that import price of the subject good drastically declined by 83.54%

Rupees Per Kilograms	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
CIF export price –China		215.23	86.25	81.84
Indexed		100.00	40.07	38.02
CIF export price –Taiwan	501.47	123.44	90.59	87.72
Indexed	100	24.62	18.06	17.49
Subject Country Cumulatively	501.47	206.94	86.57	82.56
Indexed	100	41.27	17.26	16.46
Year by year change- China		0	-60	-5
Year by year change- Taiwan		-75	-27	-3
Year by year change- Subject Country Cumulatively		-59	-58	-5

It is further noted that prices of the subject goods originated in or exported from subject countries individually and cumulatively showed steep declines over the years.

Price Undercutting.

29. A comparison for selling price of domestic industry and landed price of imported material was made. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. To determine landed price of imports from China and Taiwan, the Authority has added applicable basic customs duties

and other charges to the CIF value. Comparison of landed price of imports and selling price of domestic industry

Rupees Per Kilograms	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
CIF export price –China	0	215	86	82
Landed Value – China	0	293	113	104
CIF export price –Taiwan	501	123	91	88
Landed Value – Taiwan	684	168	119	112
Net Sales Realization of Domestic Industry	****	****	****	****
Price Undercutting from China				60-75%
Price Undercutting from Taiwan				60-75%

showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject countries were sold in the Indian market at prices, which were significantly below the selling prices of domestic industry. Dumped products were thus undercutting the domestic industry's selling price.

Price Underselling

30. It is noted that the profitability of the domestic industry has significantly been eroded, which is due to price underselling being caused by the dumped imports. It is further noted that the price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry for the domestic like product and compared the same with the landed value of subject imports to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling (more than 70%) thereby causing injury to the domestic industry. It was thus provisionally determined that imports from subject countries were made at dumped prices and at the same time much below the non-injurious price (NIP) of domestic industry.

Situation of the Domestic Industry

Preliminary remarks

31. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as Production, Capacity Utilisation, Sales Quantum, Stock, Profitability, Net Sales Realisation, the Magnitude and Margin of Dumping etc in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra.

Sales Volume

Year	2000-01	2001-02	2002-03	Jan- Dec , 03 (POI)
Sales (MT)	****	****	****	****
Trend	100	127	129	129
Demand MT	645	787	864	1061
Index	100	122	134	165
Market share Demand	60.69	62.94	58.62	49.19

32. It is noted from above that sales volumes of the domestic industry were increasing up to the period 2002-03. However, sales volumes have shown a marginal decline thereafter in the period of Investigation. Sales volume of the company was 391.16 MT during 2000-01 and after achieving a 29.41% growth the same reached to 506.20 MT in 2002-03. Authority notes that after reaching 506.20 MT in 2002-03, sales marginally fell to 505.49 MT during the POI, even when the demand of the product increased significantly. Resultantly, the share of domestic industry declined during the injury period whereas the share of subject country imports increased.

Profits

3	2000-01	2001-02	2002-03	Jan- Dec , 03 (POI)
Total Profit/Loss (Rs. Lacs)	****	****	****	****
Index	100	90	30	-9

33. Taking both the markets together, i.e. OEM and retail or after market, it is seen that profitability of the domestic industry has been severely impacted. Thus, it is provisionally concluded that imports from subject countries may have forced the domestic industry to reduce the prices in the domestic market, which has directly impacted its profitability levels to such an extent that the domestic industry is suffering significant deterioration in the profitability during the injury period and during the POI, it has even reported losses. In view of the above, it is provisionally concluded that domestic industry has suffered injury on account of decline in profits during the injury period.

Factors affecting domestic prices:

34. It is noted that the import prices of subject goods from the subject countries are continuously coming at lower prices. It may be appreciated that the level of imports amongst other factors determines the domestic prices. The market prices in the domestic market appear to have been

driven down by the higher volumes of dumped imports at dumped prices. It is further noted that price undercutting from the subject countries is very significant and there is significant price depression also on account of dumped imports from subject countries. Additionally, price underselling is also significant on account of dumped imports from subject countries.

Output

35. Production of the domestic industry was as follows:

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Production	Mt	540	600	574	605
Indexed	%	100	111.14	106.23	111.97

The Production of the domestic industry was fluctuating through injury period. When the domestic industry achieved a growth of 11.14% from 2000-01 to 2001-02, overall growth in production was only 11.97% by the POI. No injury is provisionally attributed to this parameter.

Capacity and Utilization of capacity

36. Capacity utilization of the domestic industry has shown the same trend as that of production, as may be seen from the table below:

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Capacity	Mt	652	652	652	652
Capacity Utilization	%	84.42	91.97	87.91	92.66

Capacity of the domestic industry remained the same over the years whereas capacity utilization increased to 92.66% by the POI from 84.42% in 2000-2001. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has not suffered injury on account of this parameter.

Productivity

Productivity	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Number of Employees	****	****	****	****
Productivity Per Employee	****	****	****	****
Indexed	100	105	101	108

37. It is noted that the productivity of the domestic industry increased 8% by the POI. Per employee productivity of the domestic industry shows positive trend due to increase in production and less than proportionate increase in employees. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has not suffered injury on account of this parameter.

38. However, It is noted that in spite of increase in productivity, profitability of the domestic industry declined over the injury period. While improvement in productivity should have enabled the domestic industry to increase its profits, it appears that dumped imports resulted in decline in profits. With regard to the claim made by the importer concerning the ability of the domestic industry to produce quality as well as quantity of the subject goods, it is noted that claims of the domestic industry have been verified by the verification team and the data of the domestic industry has been provisionally accepted except for some corrections in the data which have been made by the Authority.

Return on investments

39. The trends in domestic industry's return on capital employed is as follows:

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Gross Fixed Assets	Rs. Lacs	****	****	****	****
Working Capital	Rs. Lacs	****	****	****	****
Capital Employed	Rs. Lacs	****	****	****	****
Profit Loss – After Interest	Rs. Lacs	****	****	****	(****)
Return on Capital Employed -	%	****	****	****	(****)
Return on Capital Employed	Indexed	100	75.11	15.67	-7.55

It is seen that the domestic industry's return on capital employed has severely deteriorated (the decline is about 107% over the injury period). It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered injury on this parameter.

Employment and Wages

40. There is increase in the employment level with the domestic industry. Wages of the domestic industry show normal wage increases, while incidence of wages per unit of production has also increased. The Authority does not provisionally conclude any injury on this parameter

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
No. of employees	Nos.	****	****	****	****
Index		100	104	104	104
No. of employees per kg. of production	Kgs./ person	****	****	****	****
Index		100	105	101	107
Wages	Rs. Lacs	****	****	****	****
Index		100	149	153	164
Wages per kg. of production	Rs./kg.	****	****	****	****
Index		100	134	146	146

Effects on cash flow

41. Even though the petitioner is a multi product company involved in production of some other products also, the product under consideration constituted 75% of company's operations in the POI. Thus cash flow of the petitioner company is reflective of cash flow operations relating to product involved. After examining the cash flow of the domestic industry, it is noted that cash flow of the domestic industry deteriorated significantly over the injury period.

Rs. Lacs	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Cash profit	****	****	****	****
Index	100	92	53	11
Cash flow	****	****	****	****
Index	100	42.6	40.5	-38.2

42. It is thus noted from the above that cash profit and cash flow situation of the domestic industry declined in period under consideration. The decline could be due to decline in profits as a result of dumping in the Indian market. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered injury on account of this parameter

Inventories

43. Inventories of finished goods with the domestic industry have been as under.

In kgs.	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Opening Stock	****	****	****	****
Index	100	117	351	383
Closing Stock	****	****	****	****
Index	100	298	293	289
Average Stock	****	****	****	****
Index	100	215	320	332

The Authority finds that average stock of finished goods with the domestic industry increased over the period involved. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered injury on account of this parameter.

Ability to raise capital investments

44. After examining the records, it is noted that authority did not come across any inability of the domestic industry to raise capital. Hence, the authority does not provisionally conclude any injury on account of this parameter.

Growth

45. As shown in the table below, the domestic industry has faced negative growth in many parameters. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered injury on account of this parameter.

	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Sales MT	****	****	****	****
Year by Year trend		26.60	2.22	(0.14)
PBT Rs. Lacs	****	****	****	(****)
Year by Year trend		(10.32)	(66.73)	(131.91)
Market share in Demand	60.69	60.84	58.62	49.19
Year by Year trend		0.25	(3.66)	(16.08)
Average Stock of Finished Goods MT	****	****	****	****
Year by Year trend		115.53	48.57	3.78
Selling Price Rs/Kg	****	****	****	****
Year by year trend		(13.69)	(17.97)	(3.53)
Return On Capital Employed %	****	****	****	****
Year by year trend		(24.89)	(79.13)	(148.16)

The Authority finds that domestic industry faced negative growth in respect of a number of parameters. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered injury on account of this parameter.

46. Examination of claims made by the importer

(i) With regard to the claim made by the importer regarding the capability of the domestic industry to produce quality as well as quantity, it is noted that data pertaining to these submissions have been verified by the Designated Authority. No justifiable reasons appear to reject these claims, except for some corrections in the data/information, which have been made by the Designated Authority.

(ii) With regard to the argument of the importer about the demand and supply gap of the subject goods in India and at the same time creating a monopoly in the Indian market, it is noted that demand for the product under consideration assessed by the Designated Authority is in the region of 1060 in the investigation period. It is also noted that the capacity of the applicant alone is 652 MT. and capacity of other Indian Producers appear to be in the region of 300 MT. Thus, there is no wide gap in the supply and demand of the subject goods in India. Furthermore, given the nature of product, the plant & machinery required for production of the product and the investment required therein, it does not appear that the domestic industry would not be able to meet the demand, should the market for the product remain free from dumped imports. However, in a situation of dumping and significant erosion in profitability, domestic industry may not like to enhance their capacity. It is noted that the market of the subject goods has reported 65% increase in demand during the injury period. While there has been significant growth in demand, the profitability of the domestic industry has been significantly eroded, while an improvement could have been expected in such a situation.

(iii) It is noted that while Country Crafts, an importer of subject goods claimed Taiwan as a major producer and supplier of goods from Taiwan, Taiwan Economic and Culture Centre initially claimed that the goods were not being exported from Taiwan.

Conclusions on Injury

47. There has been significant increase in the volume of dumped imports from subject countries at the absolute level and also in relation to total imports and also in relation to total demand of subject goods into India. There has been significant price effect on account of dumped imports resulting into price depression, price undercutting and price underselling. The undercutting margin as well as the price depression have been determined and are considered to be significant. It is further noted that sluggish growth of sales volumes, continuous deterioration in the financial performance, decline in market share in demand (significant decline after showing increase up to 2001-2002), positive price undercutting in POI, positive price depression, decline in return on capital employed on a year to year basis, increase in average stock etc shows significant deterioration in the performance of the domestic industry over the injury period. The performance of the domestic industry, when compared between 2000-2001 and POI improved in terms of production,

sales, capacity Utilization, Productivity Per Employee. However, this can not be considered satisfactory, given the fact that large number of parameters are showing significant adverse trends during the injury period which have culminated into the domestic industry suffering losses during the POI. On the basis of the above analysis, it is provisionally concluded that the domestic industry has suffered material injury.

H. Causal link

(a) Introduction

48. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

(a) Effect of dumped imports

49. Between 2000-01 and the POI, dumped imports from the subject countries increased significantly in volume by 3532% (more than 100% from the previous year and in market share of imports by six times and in demand from 0.22% to 31% in the POI. As regards the export prices, they decreased substantially during the whole period under consideration and undercut domestic industry prices during the POI on average by ten times. Moreover, undercutting figures did not show the full impact of the dumped imports, since domestic industry prices were depressed. All this coincided with the deterioration of the situation of the domestic industry in terms of price reductions, reduced market shares as well as loss to the domestic industry. Prices of dumped imports were below those of the domestic industry throughout the period under consideration and exerted a pressure on them which forced the domestic industry to decrease prices in spite of increasing costs of production. It is, therefore, provisionally concluded that the dumped imports caused material injury to the domestic industry.

Effect of Other factors

(a) Performance of Other Domestic producers:

50. There was other domestic producers of the subject goods during the period under consideration apart from the applicant. Though they have not submitted the information in the form and manner of domestic industry proforma, it could be provisionally concluded from the examination of limited information made available before the Authority that they have been adversely impacted during the POI and their operating performance has gone down.

(d) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

51. The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased significantly during the injury period. The Authority also provisionally concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(e) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

52. According to the available information, the total import volume of the product concerned originating in countries other than subject countries are de-minimis and therefore, they are provisionally considered not to have had any impact on the domestic industry.

(f) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers and issues relating to the quality and types of the subject goods

53. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. The authority further notes that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is further noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses. With regard to argument of importer about the quality, rate and availability of the subject goods manufactured by the domestic industry, it is noted that the domestic industry produces a very large no. of different types of the product under consideration. It therefore does not appear that the petitioner does not produce and supply wide variety of the product. Further, the Petitioner, Sky Industries, has been exporting the product to a very large number of countries. It is noted that the petitioner exported to about 29 countries in the investigation period, which included Countries from different parts of the world, including some of the developed countries.

(g) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

54. On the basis of the examination of the records of the petitioner, the authority provisionally holds that developments in technology, has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

55. It is further noted that the various performance with respect to various economic indicators have been determined with respect to domestic sales

only. Hence, the authority provisionally holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

56. As regards improvement in productivity, the authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year has tended to be the almost same during the injury period. On the basis of the examination, the authority provisionally holds that the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

(h) Conclusion on causation

57. Significant increase in volume of imports between 2000-01 and POI lead to increase in share of imports in demand/consumption. As a direct consequence, share of domestic industry declined between 2000-01 and POI after recording an increase between 2000-01 and 2001-02. Market share of the dumped imports gradually increased over the periods. As a direct consequence, the market share of the domestic industry declined significantly. Imports from the subject countries were undercutting the prices of the domestic industry. As a direct consequence, the domestic industry was prevented from selling the product at a price, which would have enabled it to recover its cost of production and earn a reasonable profit. This led to significant deterioration in the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flows and return on investment.

58. Given the above analysis which has properly distinguished and separated the effects of all known factors on the situation of the domestic industry from the injurious effects of the dumped imports, it is provisionally concluded that these other factors as such did not reverse the fact that the material injury found may be attributed to the dumped imports.

59. It is, therefore, provisionally concluded that the dumped imports originating in the subject countries have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

I. Indian Industry interest.

60. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

61. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping

practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.

62. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

J. CONCLUSIONS:

63. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value.
- B. The Domestic Industry has suffered material injury;
- C. The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from Subject Countries.

64. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of subject goods from subject countries in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.

65. Accordingly, the Authority recommends that the provisional anti dumping duties be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of Narrow woven fabrics (also known as hook and loop tape fasteners or Velcro tapes) falling within Custom Heading 5806 originating in or exported from Peoples Republic of China and Chinese Taipei pending final determination. The Anti-Dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in column 9 of the following table and the landed value of imports per Kg to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Govt. on all the subject goods falling within Chapter 58 of the Customs Tariff, originating in or exported from the countries mentioned below: -

S. No.	Heading	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Reference price	Unit of measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	5806	Narrow Woven Fabrics	Any specification	Any country	Chinese Taipei	Any producer	Any exporter	7.61	Kg	US Dollar
2	5806	Narrow Woven Fabrics	Any specification	Chinese Taipei	Any country	Any producer	Any exporter	7.61	Kg	US Dollar
3	5806	Narrow Woven Fabrics	Any specification	Any country	China PR	Any producer	Any exporter	8.02	Kg	US Dollar
4.	5806	Narrow Woven Fabrics	Any specification	China PR	Any country	Any producer	Any Exporter	8.02	Kg	US Dollar

K. FURTHER PROCEDURE:

66. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings: -

(a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;

(b) Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;

(c) The Authority would provide opportunity to all the interested parties for making oral submissions, which have to be rendered thereafter in writing;

(d) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary.

(e) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

CHRISTY FERNANDEZ, Addl. Secy. and Designated Authority